याद आ गई

आज बैठे बैठे उस शहर की
याद आ गई,
जिस खिड़की से देखता था वो
याद आ गई,
इस जन्म जिससे न मिल पाउँ
याद आ गई,
उनकी चाहत मुझसे थी या नही
याद आ गई,
हसरतें जो दिल मे रह गई उनकी
याद आ गई,
कभी मुड़ के भी नही देखा उसकी
याद आ गई,
करते थे नफरत मेरी सूरत से उनकी
याद आ गई,
बरसों से जिनको देखा नही उनकी
याद आ गई,
सूरत देखे बिना न रह पाते थे उनकी
याद आ गई,
जो ना देखना चाहते सूरत मेरी
याद आ गई,
जिसके ना दिखने पर हुई तड़फन की
याद आ गई,
दर्द दिया जिसने हर वक्त मुझे उनकी
याद आ गई,
जो चीज मिल न सकी वो आज
आँख नम कर गई,
आज बैठे बैठे मेरे शहर की
याद आ गई,

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**